

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

स्वस्ति श्री श्री ऋषभ जिनेश, स्वस्ति करें जिनवर अजितेश।
संभव करें असंभव द्वेष, अभिनन्दन दुख हरे अशेष॥ १ ॥
सुमति प्रदाता सुमति जिनेश, पद्मप्रभ जिनवर पद्मेश।
जय सुपार्श्व पारस सम जान, चन्द्रप्रभ जिन चन्द्र समान॥ २ ॥
सुविधिनाथ विधिनाशनहार, शीतल शीतलता दातार।
जय श्रेयांश श्रेय करतार, वासुपूज्य शिवसुख दातार॥ ३ ॥
विमल विमल जीवन दातार, श्री अनन्त आनन्द अपार।
धर्म कहें संसार असार, शान्ति अनन्त शान्ति दातार॥ ४ ॥
कुन्थु कुन्थु के रक्षणहार, अरजिन आनन्द के अवतार।
जीता है मन मल्लि जिनेश, मुनिसुव्रत व्रत धरे अशेष॥ ५ ॥
नमि चरणों में नमैं नरेश, जीता मन्मथ नेमि जिनेश।
पारस पारस से दातार, वीर अहिंसा के अवतार॥ ६ ॥

(दोहा)

चौबीसों जिनराज ही मंगल मंगल हेतु।
स्वस्ति स्वरूप विराजहीं सबको मंगल देतु॥ ७ ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(हरिगीत)

ज्ञानी तपस्वी मुनिवरों को ऋद्धियाँ उपलब्ध हों।
पर ऋद्धियों की सिद्धियों पर रंच न वे मुग्ध हों॥
वे तो निरन्तर लीन रहते आत्मा के ज्ञान में।
आत्मा के चिन्तवन निज आत्मा के ध्यान में॥ १ ॥
अरे चौसठ ऋद्धियों में प्रथम केवलज्ञान है।
दूसरी है मनःपर्यय तृतीय अवधीज्ञान है॥

इत्यादि चौसठ ऋद्धियाँ सब ज्ञान का विस्तार है।
 रे ज्ञान के विस्तार का न आर है न पार है॥ २ ॥
 अन्य लौकिक सिद्धियाँ भी ऋद्धियों से प्राप्त हो।
 पर मुनिवरों को उन सभी से नहीं कोई राग हो॥
 वे तो स्वयं में जम गये वे तो स्वयं में रम गये।
 सारे जगत से विमुख हो सद्ज्ञान में परिणम गये॥ ३ ॥
 आतमा के चिन्तवन में आतमा के ज्ञान में।
 वे तो निरन्तर लगे रहते आतमा के ध्यान में॥
 कैसे कहें उन मुनिवरों से तुम बताओ हे प्रभो।
 निज आतमा को छोड़कर हे प्रभो हम पर ध्यान दो॥ ४ ॥
 नहीं कोई किसी का कुछ भी करे इस लोक में।
 यह जानते हैं सभी आगम ज्ञान के आलोक में॥
 सब जानते हैं समझते व्यवहार में यों बह रहे।
 उन ऋद्धिधारी ऋषिवरों से प्रभो फिर भी कह रहे॥ ५ ॥
 रे ऋद्धिधारी मुनिवरो! कल्याण सब जग का करो।
 अज्ञान मोहित जगत की दुर्गति मुनिवर परिहरो॥
 यह जगत मिथ्यामार्ग तज सन्मार्ग में वर्तन करे।
 जिनशास्त्र का स्वाध्याय कर निजज्ञान का मार्जन करे॥ ६ ॥
 अन्याय और अनीति छोड़े अभक्ष्य भक्षण न करे।
 न्याय एवं नीति से सन्मार्ग पर आगे बढ़े॥
 होवे अहिंसक आचरण आहार और विहार में।
 सावधानी रखें हम व्यवहार में व्यापार में॥ ७ ॥

(दोहा)

सभी संत मंगलमयी मंगल के आधार।
 मल गाले मंगल करें करें मंगलाचार॥ ८ ॥
 सभी ऋद्धियों के धनी सभी दिगम्बर संत।
 और कछु नहीं चाहिये चाहे भव का अंत॥ ९ ॥

इति परमर्षि स्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलि क्षिपेत्)

- ● -